मिश्मी लोकगीतों में अभिव्यक्त श्रम सौंदर्य की राग-रागनियाँ

मो. जोहुरूल इस्लाम

श्रम मानव जीवन के विकास का आधार है। मानव सभ्यता के विकास का इतिहास उसके श्रम का इतिहास है। भारत देश कृषि प्रधान देश है। किसान हमारे देश के प्राण हैं। श्रम के साथ-साथ इनके गीतों में भी श्रम सौंदर्य की अभिव्यक्ति दिखाई पड़ती है। वे अपने श्रम में इस तरह से डूब जाते हैं कि उनके गीतों में भी उसी प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति दिखाई पड़ती है। वे गीत, जिन्हें किसान वर्षा में, धूप में, आंधी में खून-पसीना एक करते हुए या मधुमय आकाश में आनंदोत्सव मनाते हुए गाते हैं। वह सूक्तियाँ, जो दैनिक जीवन में किसानों का मन बहलाती रहती हैं, वे सुख-दु:ख की कथाएँ, जो समय-समय पर उन्हें हँसाती और रुलाती हैं। किसान जीवन के कितने ही मनोवैज्ञानिक तथ्य, विचार, दृष्टिकोण और आदर्श अत्यंत सरस एवं सजीव रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। मिश्मी जनजाति का मुख्य पेशा कृषि है, वे अपने गाँव या पहाड़ों को काटकर खेती करते हैं। इनके खेतों का आकार इतना बड़ा नहीं होता जैसा कि हमें मैदानी इलाकों में दिखाई देता है। मिश्मी अधिकतर पहाड़ों पर खेती करते हैं। मैदानी इलाकों में नाम मात्र की खेती की जाती है। झूम खेती में पहाड़ों पर चढ़कर खेती करना बहुत ही कष्टदायक होता है। सामान्य परिवार के लोग एक बीघा या दो बीघा ही खेती कर पाते हैं। उससे अधिक धान बोना उनके लिए अत्यंत कठिन होता है। बड़े-बड़े वृक्षों को काटकर साफ करना, फिर उन टहनियों को काट कर साफ करके जलाना बहुत ही कठिन कार्य होता है, इतनी सारी कठिनाइयाँ मैदानी कृषि में नहीं करनी होती है। जंगल काटने का कार्य पुरुष वर्ग दाव से करता है। कार्य करते समय सभी गाँव वाले एक दूसरे की सहायता करते हैं। महिलाएँ घर के कार्यों के साथ- साथ भोजन और मदिरा की व्यवस्था करके खेतों में लाती हैं, सभी कार्य समाप्त होने के पश्चात् बीज को रोपा जाता है। एक लाठी के जरिये जिसे 'तालांग' कहा जाता है, रोपनी का कार्य अधिकतर महिलाएँ करती हैं। इस समाज में श्रम से संबंधित कार्य जैसे रोपनी, कटनी आदि महिलाएँ ही करती हैं तथा कभी-कभी अपने सुख-दु:ख संबंधी गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त करती हैं, उनका श्रम-सौंदर्य गीतों में झलकता है।

खेती के अलावा मिश्मी लोग शिकार करने का भी शौक रखते हैं। शिकारी घने जंगलों में जाकर शिकार करते हैं और शिकार यदि अधिक मिल जाए तो उसे बेच दिया जाता है। शिकार करने का भी मौसम होता है। सामान्य तौर पर शिकारी, शिकार करने लिए अक्टूबर से जनवरी के महीने में शिकार पर जाते हैं, इस मौसम में यदि खेत में काम नहीं रहता है तो वह सीधे शिकार के लिए घर से निकल पड़ते हैं।

व्यापार के तौर पर देखा जाए तो मिश्मी समाज में मिथुन सबसे महत्त्वपूर्ण जानवर है। यह उनके सामाजिक, धार्मिक क्रिया-कलापों का केंद्र बिंदु है। समाज में वही धनी है, जो किसी पूजा के अवसर पर सौ से भी अधिक मिथुनों की बलि देता है। पुराने समय में यह लोग व्यापार के लिए तिब्बत जाते थे। वे अपने साथ भालू तथा हिरण आदि का चमड़ा लेकर जाते थे और वहाँ से पीतल के बरतन तथा नमक लेकर आते थे। मिश्मी समाज की महिलाएँ कपड़े बुनने में भी कुशल हैं। श्रम का विभाजन यहाँ भी देखने को मिलता है। मिश्मी लोकगीतों में समाज के प्रति एक नया सौंदर्यबोध देखा जा सकता है। वे लोग दिन भर परिश्रम करते हैं। चाहे

खेत में काम करना हो, चक्की पीसना हो, या फिर शिकार करना हो उनकी संवेदना को वे गीतों के माध्यम से समाज तक लाने का प्रयास करते हैं। श्रम से समाज की एक नई छवि सामने आती है। वे इन गीतों में जीवन के संघर्षों और अन्य विषमताओं तथा बाधाओं को सहन करते हुए भी कार्य करना नहीं छोड़ते हैं। जाड़े के दिनों में देहाती, गरीब किसान की दशा का चित्रण इस गीत में अत्यंत सजीव है। मिश्मी का एक धान कूटने संबंधी गीत यहाँ प्रस्तुत है–

"दायूसों आन्ने वे
सिकमपे गासानाम ..... गू न्यू ....
पे ..... डू वा ..... गासा याम
ब्रूया नोदी ..... दाम ..... इ सिंग गो
सिकम को गासानम ..... लेह ना दे
सि ..... कम सा इजू ने
इहलंग बचाई .... या ... हाँ .... कव .... रव दे कन्मगू
ब्रूमू कुइतंग तू ..... दी वू मू कुइजातू
सिकमत्यु गुपएना गू न्यू हूँ
बियापिंग दापूनियम"[1]

(अर्थात् सूरज निकलने से पहले सभी काम करने पड़ते हैं। धान, कोदो, मक्का सुबह ही पीसकर तैयार करना पड़ता है। पानी भी बहुत दूर से लाना पड़ता है। खेत में धान लगाना, सफाई करना, कटाई करना भी गाँव वाले मिलकर करते हैं। बरसात के मौसम में हमें प्राय: चिंता रहती है कि कब खेत का काम समाप्त होगा और कब बारिश रुकेगी और हम वापस खेत में जाकर काम कर सकेंगे।)

इस प्रकार हम देखते हैं कि लोकगीतों में श्रम की महत्ता को दिखाया गया है। किसान किस तरह से अपना कष्टदायक जीवन बिताते हैं, उसका मार्मिक चित्रण इन दोनों गीतों में देखा जा सकता है। मिश्मी गीत में बूढ़ी औरत अपनी वेदना को प्रकट कर रही है कि सुबह उठकर ही धान कूटना, कोदो पीसना पड़ता है। इसके बाद खेत में जाकर काम करना पड़ता है। इसके साथ-साथ बारिश की चिंता भी लगी रहती है। अत्यधिक वर्षा भी फसलों के लिए हानिकारक है। इसकी भी चिंता हमेशा लगी रहती है कि यदि ऐसे ही वर्षा होती रही तो क्या खाएँगे। इस प्रकार गीतों में श्रम सौंदर्य की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। मिश्मी का एक और रोपनी गीत जहाँ श्रम सौंदर्य का सुंदर चित्रण हुआ है, प्रस्तुत है-

"दापई ये रसींग पे .....
ए ..... दा पो ..... बढ़ो ला ..... गा ..... लो ओ ने इथा दी
जाबा ने अलिइ न्यू दायू आ .... मलिइ .... दा औ औ तिलंग सई रदियूया
रपम म अ ..... कुईसानम ..... पो दांग
मलइतो नवा का .... सीतेया ..... आबामों गासानम लिगो मो लिगो मो
बा ... बे ... या गेहेतेह दसमदबेह ....
दे त्यो तो पलव न ..... हन ने त्यो ओ ओ इथा क्यों ....."[2]

(अर्थात् सुबह उठकर ओखली में धान पीसते हैं, एक दिन का चावल सुबह ही कूट कर निकालते हैं। जंगल जाकर जंगली पत्ते ढूँढ़कर लाया करते हैं। उसे ही उबाल कर खाते हैं फिर इसके बाद ही खेत में जाते हैं। पक्षियों के साथ-साथ हम भी गीत गाया करते हैं। इससे खेत में काम करने में आसानी होती है। मेहनत भी आसान लगने लगती है।

इस प्रकार मिश्मी के रोपनी संबंधी गीत में गाँव की औरतें सुबह उठकर किस तरह से भोजन तैयार करती हैं, उसका सुंदर चित्रण इस गीत में हुआ है। यह लोग श्रम के प्रति अपने आपको किस तरह ढाल चुके हैं, इसे इन गीतों में देखा गया है। चाहे कितनी भी तकलीफ क्यों न हो अपने कार्य के प्रति जो उत्साह है, गीतों में द्रष्टव्य है। श्रम करने की प्रेरणा यहाँ हम देख सकते हैं। पक्षियों की आवाज़ सुनकर एवं मस्त होकर खेतों में काम करना प्रस्तुत गीत के माध्यम से दर्शाया गया है।

मिश्मी गीत में विवाह न होने के कारण उनकी पीड़ा लोकगीतों के माध्यम से व्यक्त हुई है। विवाह न होने का कारण यह है कि इदु मिश्मी परिवारों में विवाह पूर्व सात वंशावलियों को देखा जाता है। यदि इन वंशालियों से संबंधित कोई रक्त संबंधी संबंध लड़के के परिवार के साथ पाया जाता है तो वैवाहिक संबंधों का निषेध माना जाता है। इसी कारण प्रेम होने के पश्चात् वैवाहिक संबंध स्थापित न होने के कारण कई स्त्रियाँ आत्महत्या कर लेती हैं या अविवाहित रहना ही स्वीकार कर लेती हैं। इस प्रकार प्रस्तुत गीत में युवती ने अपने आप को रुई एवं मछली आदि से तुलना करते हुए यह बताने का प्रयास किया है कि पूरी तरह से पूर्ण होते हुए भी मेरी शादी नहीं हो पा रही है। मिश्मी का एक परिधान संबंधी गीत यहाँ दृष्टव्य है –

"आब्रिलों गादा द्रोथु हाकेना ई ..... ई
आ आ रो गादा होला हाकेना ई .....ई
बूनची कोवेया पू .... पू ..... गामा हो ....ई .....ई
ऊंची कोवेया डांड्रा गामा हो ई ..... ई
आब्रिलों गादा द्रोथु हाकेना ई ..... ई
आ आ रो गादा होला हाकेना ई ..... ई
सोंजम्बो वूची बुपी आपूठों ई बी व ई ..... ई
नाऊ तो उ जी ..... चीली ऐबाको ई बी व ई .... ई
आब्रिलों गादा द्रोथु हाकेना ई ..... ई
आ आ रो गादा होला हाकेना ई .....ई
आब्रीपों ऊँ जी मूलिकों ई बी व ई ..... ई
ऐलोपो उंजी मुशाकों ई बी व ई .... ई
आब्रिलों गादा द्रोथु हाकेना ई ..... ई
आ आ रो गादा होला हाकेना ई .....ई।"[3]

(अर्थात् घर में शादी का माहौल चल रहा है। इसीलिए घर में तैयारी भी चल रही है। बड़ी बहन जंगल से पत्ते लेने गयी है। उसी समय अपने दु:ख की व्यथा, गीत के माध्यम से वह व्यक्त कर रही है और उम्र हो जाने पर विवाह न होने के कारण वह बहुत दु:खी है। अपनी इसी पीड़ा को पत्ते काटते समय वह व्यक्त कर रही है कि

मैं मेखला बहुत सुंदर बुनती हूँ और सभी काम कर लेती हूँ यह बात सभी को बता देना। इस समय मुझसे छोटे बच्चों का विवाह हो रहा है किंतु मेरा विवाह अभी तक नहीं हुआ है। मुझमें तो सभी गुण हैं फिर भी मेरा विवाह नहीं हो रहा है। कोई मेरी शादी का निवेदन लेकर आए। मैं शायद इस गाँव की देखभाल करने के लिए ही बनी हुई हूँ। मैं तो उस रुई के पेड़ की तरह हो गयी हूँ जिसका बीज़ पूरी दुनिया में घूमता फिरता है, फिर भी पेड़ एक ही स्थान पर रहता है। मैं उस मछली की तरह हूँ जो केवल झील का देख-भाल करती है। मैं घर के बेटों की तरह हो गयी हूँ जो घर के सभी कार्य करते हैं और घर को चलाते हैं। मैं जंगली अरवी की तरह हो गयी हूँ, जिसकी लताएँ चारो ओर फैल जाती हैं, किंतु अरवी एक ही स्थान पर रहती है। घर का सारा काम मुझे ही करना पड़ता है। खेत के अलावा भी मैं सभी काम कर लेती हूँ।)

इस प्रकार मिश्मी लोकगीतों में हमें श्रमिक वर्ग के जीवन की स्थिति का चित्रण श्रम सौंदर्य के द्वारा दिखाई पड़ता है। मिश्मी के लोकगीतों में सामान्य जनता के जीवन के विविध पक्षों का चित्रण गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है। इसके साथ ही मिश्मी समाज में आम जनता के जीवन का परिचय भी हमें मिलता है। मिश्मी लोकगीतों में श्रमिक वर्ग के व्यक्तियों एवं उनके कार्य व्यापारों के चित्रण के माध्यम से श्रम के महत्त्व संबंधी गीतों के सौंदर्य को उद्घाटित किया गया है। मिश्मी क्षेत्र में कृषि के अलावा अनेक व्यवसाय भी करते हुए देखा जा सकता है। यहाँ के लोग अपने श्रम में संलग्न रहते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. स्वयं संकलित (17/07/2020), स्थान- भेकुलियांग, जिला- लोहित, अरुणाचल प्रदेश
2. स्वयं संकलित (17/07/2020), स्थान- भेकुलियांग, जिला- लोहित, अरुणाचल प्रदेश
3. स्वयं संकलित (1/07/2020), स्थान- इदुली , जिला- रोइंग, अरुणाचल प्रदेश
4. ताना, अनिया जोराम, अरुणाचल प्रदेश की निशी लोकगीत: सांस्कृतिक अध्ययन,गौतम बुक सेंटर, 2009 ई.
5. Baruah, Tapan kumar, The Idu Mishmi, Directorate of Research, Government of Arunachal Pradesh, Itanagar, 2017
6. Bhattacharjee, Tarun Kumar, The Idu Mishmi of Mathun and Dri valley, shillong,Directorate of Research, Government of Arunachal Pradesh, 1983.
7. Deka, Bidyut. C, Agricultural folk song of Arunachal Pradesh, Meghalaya, Indian council for Agricultural Research, Umiam, 2016.
8. Dutta, D.K, The Miju Mishmi of Arunachal Pradesh, Directorate of Research Arunachal Pradesh, 2012.

*(**लेखकीय परिचय :** मो. जोहुरूल इस्लाम पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग, मेघालय के हिंदी विभाग में शोधार्थी हैं। आपकी अभिरुचि प्रसारण सेवा में है और आप आकाशवाणी, शिलांग में उद्घोषक के रूप में कार्यरत हैं। मोबा:7005951832, ई-मेल : mdzohurul141996@gmail.com)*